शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2014

संस्कृत-साहित्य और पर्यावरण सुधार

डॉ.रामहेत गौतम
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत)
डॉ..हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

पर्यावरणीय चेतना आज के युग की एक रचनात्मक एवं लोक-कल्याणकारी सोच है, क्योंकि पर्यावरण की पवित्रता, मानव एवं अन्य सम्पूर्ण जीव-जगत् के स्थायित्व में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। दूषित पर्यावरण मनुष्य एवं अन्य सभी प्राणियों के लिए घातक सिद्ध होता है। वस्तुतः सम्पूर्ण सृष्टि के अस्तित्व के लिए पर्यावरण को शुद्ध रखना परमावश्यक है। पर्यावरण के प्रदूषित होने पर मानव के साथ-साथ समस्त जीव एक अप्रत्याशित घुटन का अनुभव करते हुए श्वांस, त्वचा, हड्डी, हृदय, नेत्र आदि सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के रोगों के शिकार होते हैं। इससे उनकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता धीरे-धीरे या अचानक खत्म हो जाती है। अतः सृष्टि के पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना एवं प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं दार्शनिक आदि सभी प्रकार के पर्यावरण को पवित्र रखना हमारा परम नैतिक धर्म एवं कत्तव्य है। इसी में मानव का हित एवं लोकहित है। प्रस्तुत शोध पत्र में संस्कृत साहित्य में पर्यावरण सुधार पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

संस्कृत-साहित्य में पर्यावरण को पवित्र बनाने के अनेक उपाय निरूपित किए हैं। 'मानव की ऐश्वर्यभोग की अभिलाषा' को ही पर्यावरण प्रदूषण का मूल कारण माना गया है-

सुखार्थमशुभं कृत्वा य एते भृशदुःखिताः।
आस्वादः स किमेतेषां करोति सुखमण्वपि1

अर्थात् सुख (ऐश्वर्य) भोग के लिए ही मनुष्य अशुभ कर्म (पर्यावरण का ह्रास) करके मनुष्य नाना-प्रकार के दुःख भोग रहे हैं, सुख तो अणुमात्र भी नहीं। मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं दार्शनिक पर्यावरण को दूषित करता है और दुःखों (कष्टों) के कुचक्र में फंस जाता है। अतः मानव-मात्र के मन की पवित्रता पर बल दिया गया है-

'यतते मनसः शमे'2 निर्मल मन राजा के द्वारा राजकीय उपायों से एवं राजा या समाज द्वारा सात्त्विक गुणों के ग्रहण आदि सदाचारपूर्ण नैतिक नियमों के आचरण से पर्यावरण के संरक्षण में अपना योगदान कर सकता है। प्राकृतिक पर्यावरण सन्तुलित रहे इसके लिए संस्कृत-साहित्य में राज्य-शासन एवं जन-सामान्य द्वारा किए गए अनेक कार्य वर्णित हैं। काव्यों - महाकाव्यों का अधिकांश कथानक वनों में ही घटित होता है, जो वनों के सौन्दर्य तथा दारुण दोनों ही रूपों को हमारे समक्ष रखता है, किन्तु नगरों, जनपदों आदि के वर्णन को भी उन्होंने

प्रकृति के उपादान वृक्षों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों इत्यादि से वंचित नहीं रखा है, क्योंकि वे भली-भाँति जानते थे प्राकृतिक सन्तुलन के बिना कुछ भी सुरक्षित नहीं है। प्रकृति इस सम्पूर्ण जगत् का आधार है। जड़-चेतन उभयरूपा प्रकृति मनुष्य के सुख-दुःख में सहचरी है। मनुष्य को मनःशान्ति प्रकृति की गोद में ही मिलती है।

वन संरक्षण- संस्कृत-जगत के मनीषियों ने जगह-जगह वनों के वैशिष्ट्य को वर्णित किया है और पेड़-पौधों को कल्याणकारी मानते हुए वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित किया है 'ततः शिवं कुसुमित बालपादपं।'3 'छायाफलादयर्थं वृक्षमाश्रयते जनः।'4 पेड़ सदा शिव (कल्याणकारी) होते हैं, अतः पुष्प, फल एवं छाया के लिए लोगों द्वारा लगाये जाते हैं। महाकवि अश्वघोष ने वनों को व्यापार के लिए काटने के लिए लोगों को जागृत करते हुए लिखा है

क्रयार्थं प्रार्थितो गृध्नुर्जेतोऽदित्सुस्तमब्रवीत्।
पूरितामपि वित्तेन भूमिं दास्ये न कर्हिचित्5

अर्थात् वन को खरीदने की इच्छा से राजा सुदत्त ने वन के मालिक जेत से प्रार्थना की, किन्तु जेत ने वन को बेचने से स्पष्ट इंकार करते हुए कहा "धन से इस वन की सम्पूर्ण भूमि को आच्छादित (पूरित) कर देने पर भी मैं इस वन को नहीं बेचूँगा।" इस कथन के द्वारा महाकवि ने सन्देश दिया है कि वनों का मूल्य दौलत से अधिक है। धन कमाने के लालच में अपने आस-पास के वनों को न काटें और न काटने दें, क्योंकि विविध प्रकार के पेड़-पौधों से युक्त वन सर्वकाल सुख प्रदाता एवं रम्य होते हैं 'सर्वकाल सुखप्रदत्तम्..वनं रम्यं ददर्थ बहुपादपम्।"6

पशु-पक्षी संरक्षण- संस्कृत-साहित्य में विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों एवं अन्य जीव-जन्तुओं का यथावसर बखूबी वर्णन प्रस्तुत करते हुए हमारे पर्यावरण में उनकी महत्ता को प्रतिपादित किया है। वीरता प्रदर्शन के लिए सिंह, व्याघ्र, बाघ आदि शक्तिशाली जानवरों एवं एकाग्रता, फुर्ती एवं निशानेबाजी के प्रदर्शन के लिए हिरण आदि जानवरों एवं हंस आदि पक्षियों के वध के प्रसंग में विरोध प्रकट करते हुए कहा गया हैं कि 'सर्वभूतेषु कारुण्यं मैत्री च।'7 हे मानव! तू इन समस्त प्राणियों पर दया कर, उनकी हत्या मत कर, वे भी तुम्हारी तरह प्रकृति की गोद में किलकारियाँ भरते हुए प्राणी हैं, उनसे मैत्री (प्रेम) कर। प्राणियों पर दया करना ही सबसे बड़ा धर्म है। 'सर्वभूतेषु दया हि धर्मः।'8

जल संरक्षण- महाकवि ने जल के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है 'जगत्ताय प्रतप्तानां जलराशिं च वा´छताम्।'9 'इष्टं हि तर्ष प्रशमाय तोयं।'10 जलं पर्युषितं त्याज्यम्।'11 गर्मी एवं प्यास से व्याकुल जगत् के लिए जल अनिवार्य है। जल के बिना सृष्टि का जीवित रहना असम्भव है। प्यास शान्त करने के लिए पवित्र जल इष्ट है। बासी (अशुद्ध/दूषित) जल नहीं पीना चाहिए। दूषित जल से हैजा आदि जानलेवा उदर रोग कष्ट आदि चर्म रोग पनपते हैं, अतः लोगों को दूषित पानी पीने से मना किया है। बच्चों के जन्म पर धर्माभिलाषी लोगों द्वारा जल स्रोतों का निर्माण कराये जाने के वर्णन प्राप्त होते हैं- .....कूपप्रपापुष्करिणी वनानाम्। चक्रुः क्रियास्तत्र च धर्मकामाः ..।12 अर्थात् धर्माभिलाषी लोगों ने कुआँ, पौखरा, तालाब बनवाये। इस प्रकार मनीषीजन जनसामान्य का ध्यान जल एवं जल स्त्रोतों के संरक्षण के प्रति आकृष्ट करते हुए कहना चाहते हैं कि शुद्ध जल हमारा जीवन है, अतः जल को दूषित न करें और जल स्त्रोत हमारे

जीवनदाता हैं, जिन्हें नष्ट न होने दें। वर्तमान में कहीं भी देखा जा सकता है कि अधिकतर जल स्रोतों के आस-पास गड्ढों में प्लास्टिक एवं अन्य रासायनिक कचरा पड़ा रहता है, जिससे जलस्रोतों का जल दूषित होकर अनेक रोगों का कारण बन जाता है। इस दिशा में लोगों को जागृत करना परम आवश्यक है कि वे किसी भी प्रकार के कचरे को जलस्रोतों के आस-पास न डालें और प्लास्टिक कचरे को एकत्रित कर पुनः उपयोग के लिए प्लास्टिक के व्यापारियों को दे दें। साथ ही कारखानों का अवशिष्ट कचरा नदी, तालाबों आदि में न डाला जाये, तभी जल शुद्ध एवं जीवनदायक रह सकेगा। 'माऽपो हिंसीः मा औषधीहिंसीः।'13

वायु संरक्षण - संस्कृत-साहित्य में वायु की शुद्धता के महत्त्व को कई जगह प्रतिपादित किया है, जैसे बुद्धचरित में गर्भवती महामाया का शुद्ध वायु-लाभ के लिए लुम्बिनी वन जाना, राजकुमार सर्वार्थसिद्ध (सिद्धार्थ) का उपवन भ्रमण एवं वन-गमन बोधिसत्त्व को पीपल के पेड़ के नीचे बुद्धत्व की प्राप्ति आदि। आज भी पीपल को बोधिवृक्ष के नाम से पूजा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी सिद्ध किया जा चुका है कि पीपल एक ऐसा वृक्ष है, जो दिन के साथ-साथ रात्रि में भी प्राणवायु (ऑक्सीजन) छोड़ता है। लोग पीपल को अत्यन्त पवित्र वृक्ष मानकर पूजते हैं और लोग पीपल को न काटते हैं और न जलाते हैं। यह आस्था अच्छी है और हमारी सरकार व बुद्धिजीवी लोगों को इस ओर ध्यान देना चाहिए और सार्वजनिक स्थलों सड़क के किनारों आदि पर अधिक से अधिक पीपल के पेड़ लगाने चाहिए, जिससे काफी हद तक वायु प्रदूषण को रोका जा सकता है। महाकवि ने वर्णित किया है कि 'वाता ववुः स्पर्शसुखा मनोज्ञा।'14 स्पर्श से सुख देने वाली एवं मन को लुभाने वाली वायु बही। वायु सुखद तभी हो सकती है, जब वह प्रदूषण से मुक्त हो, परन्तु वर्तमान में वायु प्रदूषण एक गम्भीर समस्या बन चुकी है। दुष्परिणाम स्वरूप श्वाँस की बीमारियाँ दिनों-दिन फैल रही हैं। वायु-प्रदूषण से मुक्ति पाने का प्रथम उपाय वायुमण्डल में छोड़े जाने वाले धुएँ को न्यून किया जाए, कारखानों की धुआँ उगलती चिमनियों पर विशेष फिल्टर लगाये जायें, छोटी-छोटी दूरी तय करने के लिए साईकिल जैसे वाहनों को प्रोत्साहित किया जाए। बड़े-बड़े वाहनों के ईंधन के रूप में कम प्रदूषण फैलाने वाले विकल्पों की खोज पर जोर दिया जाये। घरों से निकला कचरा बस्ती से बाहर ढक्कन वाले गड्ढों में ही डाला जाये। रासायनिक कचरे को जलाकर नष्ट करने की बजाय विशेष तकनीक से नष्ट किया जाये। इस प्रकार के सकारात्मक उपाय अपनाने से वायु-प्रदूषण कम होगा। साथ ही अधिक से अधिक संख्या में पेड़-पौधे रोपे जायें। वन-उपवन अधिक संख्या में होने से स्वर्ग जैसा सुकून मिलता है 15 क्योंकि स्वच्छ वातावरण में मनुष्य स्वस्थ रहता है।

ध्वनि प्रदूषण से बचाव - वर्तमान में ध्वनि प्रदूषण भी एक गम्भीर समस्या है। ध्वनि की तीव्रता किसी को भी बहरा एवं मानसिक रोगी बना सकती है। इससे कमजोर हृदय वाले व्यक्तियों की मृत्यु तक हो सकती है। सहनशीलता से अधिक ध्वनि की प्रबलता एवं ध्वनि की अस्पष्टता को ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। आज घरों में मनोरंजन के लिए बजाये जाने वाले डी.जे. आदि वाद्य यन्त्र ध्वनि को प्रदूषित कर रहे हैं, तो घरों के बाहर तीव्र ध्वनि वाले लाउडस्पीकर, वाहनों के हॉर्न आदि ध्वनि

प्रदूषण को और भयावह बना देते हैं। ध्वनि की अति प्रबलता व प्रदूषण रोगियों व वृद्धों को असहनीय होने से कष्ट देता है और विद्यार्थियों का भी ध्यान भंग करता है। अतः ध्वनि प्रदूषण पर नियन्त्रण परम आवश्यक है, जिसके लिए सरकार द्वारा तीव्र ध्वनि उत्पन्न करने वाले यन्त्रों का प्रयोग प्रतिबंधित किया गया है, फिर भी ध्वनि प्रदूषण नियन्त्रित नहीं हो पा रहा है, क्योंकि ध्वनि प्रदूषक यन्त्रों का उपयोग करने वालों में जागृति का अभाव है। अतः लोगों को जागृत किया जाना चाहिए। महाकवि ने मनोरंजन के लिए पणव, तूर्य, शहनाई, बाँसुरी, मृदंग, दुन्दुभी, नृत्य-नाट्य आदि साधनों का वर्णन किया है, ये साधन ध्वनि प्रदूषण नहीं फैलाते। इससे महाकवि ने सन्देश दिया है कि मनोरंजन हो या प्रचार-प्रसार सभी क्षेत्रों में सीमित ध्वनि वाले यंत्रों का ही प्रयोग किया जाये, यही मानव व अन्य जीव-जगत् के हित में है।

मृदा संरक्षण - महाकवि ने बुद्धचरित में वर्णित किया है कि राजा शुद्धोधन के राज्य में अल्प श्रम में भी कृषि की अच्छी पैदावार हुई और औषधियाँ भी सरस व पौष्टिक हुईं।16 इससे स्पष्ट होता है कि उस समय मृदा प्रदूषण मुक्त एवं अत्यन्त उपजाऊ रही होगी, परन्तु आज मिट्टी भी प्रदूषण से अछूती नहीं रही। मृदा का लवण, खनिज, कार्बनिक पदार्थ, गैस एवं पानी की मात्रा का सन्तुलन बिगड़ गया है और मृदा दूषित होती जा रही है, जिससे मृदा में कृषि की उपज कम हो गयी है। कृषि फल की पोषण-शक्ति कम हो गयी है। मृदा का प्रमुख कारण कीटनाशकों का उपयोग, रासायनिक पदार्थों व कचरे का खुले व कृषि क्षेत्रों व जलस्रोतों में ड़ालना है। मृदा प्रदूषण को रोकने के लिए किसानों को समझाना होगा कि वे रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम से कम करें, कृषि में रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग बन्द करें, खतरनाक कीटनाशक दवाइयों का उत्पादन बन्द हो और कारखानों का रासायनिक कचरा कृषि भूमि पर न डाला जाए। अतः वैदिक ऋषि कामना करते हैं कि- पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः'17

निष्कर्ष

सम्पूर्ण सृष्टि के अस्तित्व के लिए पर्यावरण को शुद्ध रखना परमावश्यक है। सृष्टि के पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना एवं प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं दार्शनिक आदि सभी प्रकार के पर्यावरण को पवित्र रखना हमारा परम नैतिक धर्म एवं कर्तव्य है। इसी में मानव का हित एवं लोकहित है। मानव-मात्र के मन की पवित्रता परमावश्यक है। मन को पवित्र विचारों वाला बनाते हुए दुष्परिणामी कार्यों से निवृत होकर सदकार्यों में प्रवृत्ति ही मानवहित में है। अतः नवचेतना की कामना है कि पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शी च वायुज्र्वलितं च तेजः। नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्18 'गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु, प्रज्वलित तेज, शब्द सहित आकाश एवं महत्तत्त्वये सभी मेरे प्रातःकाल (नवचिंतन) को मंगलमय करें।'

संदर्भ

1 बुद्धचरित 14/18 , 2 बुद्धचरित 12/48
3 बुद्धचरित 3/64 , 4 बुद्धचरित 18/75
5 बुद्धचरित 18/81 , 6 बुद्धचरित 18/62
7 बुद्धचरित 21/04
8 बुद्धचरित 4/17
9 बुद्धचरित 24/53
10 बुद्धचरित 11/37
11 शिवरहस्य

ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2014

12 बुद्धचरित 2/12
13 बुद्धचरित 6/22
14 बुद्धचरित 1/22
15 बुद्धचरित 2/12
16 बुद्धचरित 2/8
17 बुद्धचरित 13/8
18 वामन पुराण 14/26